'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 6 4 जून 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

ग्रीष्मकालीन उच्च प्रशिक्षण शिविर संपन्न

'राष्ट्र यज्ञ की ज्वाला को क्षीण न होने दें'

हमारे पूर्वजों ने इन पहाड़ों, जंगलों एवं रेत के मैदानों में अचिन्त्य खेल-खेलकर जिस राष्ट्र यज्ञ को प्रज्ज्वलित किया उसकी ज्वाला को क्षीण नहीं होने देना है बल्कि हमें अपने जीवन को आहूत कर उसे प्रज्ज्वलित करना है। इस हेतु अपने आपको तैयार करने के लिए हमने 11 दिन पूर्व एक अनुष्ठान प्रारम्भ किया जिसका आज समापन हो रहा है। इस अनुष्ठान के प्रारम्भ में एवं अनुष्ठान के दौरान हमें कुछ हिदायतें दी गईं, कुछ निर्देश दिए गए, हम यहां क्यों आए, हमको क्या करना है, हमको कहां जाना है, व्यष्टि, समष्टि व परमेष्टि में क्या संबंध है, हमारे जीवन को यह तीन आयाम कैसे प्रभावित करते हैं आदि बातें बताई गईं एवं तद्नुकूल अभ्यास करवाया गया।

भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट के गेहूं रोड, बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में 11 मई से 21 मई तक आयोजित श्री क्षत्रिय युवक संघ के उच्च प्रशिक्षण शिविर के विदाई कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही।

उन्होंने कहा कि हमारे घर-परिवारों में युग का प्रभाव है, पतन निरन्तर अपना प्रसार कर रहा है, परिवार, समाज, कौम, राष्ट्र टूट रहे हैं, व्यक्ति व्यक्ति के बीच संबंध कमजोर हो रहे हैं, राष्ट्र पर लोगों की आंखें गड़ी हैं, जिन छोटे-छोटे राष्ट्रों की हमने सहायता की वे ही हमें आंखे दिखा रहे हैं ऐसे में हमारा दायित्व बढ़ जाता है। हमारे पूर्वजों ने इस राष्ट्र, संस्कृति एवं मान बिन्दुओं की रक्षा की है उसी के अनुरूप हमारे मन में इस शिविर के दौरान संकल्प उठा है, एक हूक उठी है, संघ चाहता है कि आपमें उठी वह हूक जागृत रहे। हमें संसार को जगाना है लेकिन जगा वही सकता है जो स्वयं जागृत है। संघ ने इन 11 दिनों में आपको जागृत करने का प्रबंध किया लेकिन अब सारी जिम्मेदारी आपकी होगी।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

'धार्मिक कट्टरता देश के लिए घातक'

धार्मिक कट्टरता किसी भी प्रकार की हो वह देश के लिए घातक है। वह देश को जोड़ती नहीं बल्कि तोड़ती है। हम भी क्षत्रियों की बात करते हैं और क्षत्रियों ने सदैव राष्ट्र की रक्षा की है ऐसे में क्षत्रियत्व की बात करना किसी प्रकार की संकुचित्तता नहीं है। क्षत्रिय वर्ग नहीं बल्कि क्षात्रधर्म महत्वपूर्ण है इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ में कोई भी आ सकता है, लेकिन हम बात क्षत्रियों की ही करेंगे, क्षत्रियत्व ही हमारा विषय है। उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान संघ प्रमुख श्री ने पत्रकारों से वार्ता के दौरान उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि तलवार से क्षत्रिय की परिभाषा का कोई संबंध नहीं है, वह तो एक साधन है। क्षत्रिय की परिभाषा गीता में वर्णित है और वहां वर्णित गुणों शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, संघर्ष प्रियता, दान एवं ईश्वरीय भाव को धारण करना ही क्षत्रियत्व है, इनके बिना हम राजपूत हो सकते हैं, क्षत्रिय नहीं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

किस रूप में याद करें 'प्रताप' को!

आगामी ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया तद्नुसार 16 जून को महाराणा प्रताप की जयंती मनाई जाएगी। अनेक स्थानों पर विगत 9 मई को आंग्ल पंचांग के अनुसार उनकी जयंती मनाई गई। हमारे सामने यह प्रश्न आ सकता है कि हम महाराणा प्रताप को किस रूप में याद करें। क्या महाराणा प्रताप को एक भूखण्ड के शासक के रूप में याद किया जाए तो शासक तो मेवाड़ से कहीं बड़े भूखण्ड के अनेक थे उस समय लेकिन उन्हें तो प्रताप की तरह याद नहीं किया जाता। क्या प्रताप को एक हिन्दू राजा के रूप में याद किया जाए जिसने मुसलमानों से संघर्ष किया तो प्रताप के साथ लड़ने वालों में मुसलमान भी थे और सामने लड़ने वालों में हिन्दू भी थे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'सोने की भांति तपकर निखरना है'

बाहरी आचरण एवं वातावरण से दूर एकान्त स्थान पर हम सबको मिलकर श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा प्रदत्त प्रणाली में सात दिन तक सोने की भांति तपकर निखरना है। इसके लिए संसार के वातावरण से जो अवांछनीय लेकर आई हैं उसे छोड़ने को तत्पर होना है एवं तत्परतापूर्वक यहां करवाए जा रहे श्रेष्ठता प्राप्ति के अभ्यास में संलग्न होना है।

जैसलमेर के निकट स्थित दादाबाड़ी धाम बरमसर में आयोजित श्री क्षत्रिय युवक संघ के बालिका माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थी बालिकाओं का स्वागत करते हुए शिविर संचालिका जागृति कंवर हरदासकाबास ने उपर्युक्त बात कही।

उन्होंने कहा कि हमें यहां जीवन को आदर्श रूप में जीने की कला सिखाई जाएगी। हमें स्मरण करवाया जाएगा कि हम सतियों एवं सूरमाओं की संताने हैं। हमें हमारे पूर्वजों द्वारा प्रदत्त शक्ति को पुनः हासिल करने का मार्ग बताया जाएगा एवं उस मार्ग पर चलने का अभ्यास करवाया जाएगा। हमें हमारे कुल की मान मर्यादा एवं संस्कारों से अवगत करवाया जाएगा, हमें यह दिशा एवं शिक्षा दी जाएगी कि किस प्रकार आदर्श जीवन जीकर हम हमारे समाज के मस्तक को गर्व से ऊंचा उठाए रख सकती है। क्षत्रियों के गौरवशाली इतिहास में क्षत्राणियों का भी अमूल्य योगदान रहा है, हमें उस योगदान को जानकर समझकर उस ओर बढ़ने का अभ्यास करना है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

आज की राजनीति में नौकरशाही और राजनीति का गठजोड़ सर्वविदित है। भारतीय संविधान की मूल अवधारणा में कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं विधायिका का अलग-अलग कार्य क्षेत्र है एवं तीनों अपनी-अपनी सीमाओं में रहते हुए एक-दूसरे को राष्ट्र हित में नियंत्रित करें, सहयोग करें ऐसी आदर्श कल्पना की गई। लेकिन कालान्तर में कार्यपालिका एवं विधायिका ने अपने व्यक्तिगत हितों के लिए गठजोड़ बनाया और उस नापाक गठजोड़ के परिणाम स्वरूप ये परस्पर एक-दूसरे के हितों का पोषण करते रहे और राष्ट्र हित या जनकल्याण नेपथ्य में चला गया। आज कार्यपालिका कोई भी काम विधायकों या सांसदों की सिफारिश के बिना नहीं करती और एक सांसद या विधायक की एक सिफारिश मानने के बदले कार्यपालक अनेक व्यक्तिगत हित साधते हैं। विधायक और सांसद भी उनके हित साधन पर मौन रहते हैं क्योंकि उनके भी तो व्यक्तिगत हित इसी माध्यम से सधते है। पूज्य तनसिंह जी भी विधायक एवं सांसद के रूप में अनेक वर्षों तक भारतीय विधायिका के सदस्य रहे। उन्होंने प्रयास पूर्वक अपने आपको विधायी कार्यों तक ही सीमित रखा। एक बार एक सज्जन उनके पास अपने किसी काम को लेकर किसी अधिकारी को सिफारिश करने का आग्रह लेकर आए। पूज्य तनसिंह जी ने उनसे कहा कि सिफारिश तो नहीं कोई शिकायत करनी हो तो बताओ। यदि मैं आपके एक काम के लिए उक्त अधिकारी को सिफारिश करूंगा तो उस एक काम की आड़ में वह अनेक नियम विरुद्ध काम कर अपने व्यक्तिगत हितों के लिए जनता के हितों को प्रतिस्थापित करेगा इसलिए सिफारिश की अपेक्षा उस अधिकारी ने अपने दायित्व के निर्वहन में कोई कोताही बरती हो तो बताओ ताकि उसकी शिकायत कर उसे कर्तव्य पालन में प्रवृत कर सकूं। इस प्रकार उन्होंने सदैव विधायिका का अंग रहते हुए अपने विधायी कर्तव्यों को ही प्राथमिकता दी। अपने क्षेत्र की जनता के सार्वजनिक मुद्दों के लिए सदैव विधायी अधिकारों का उपयोग किया लेकिन किसी व्यक्तिगत कार्य के लिए कभी अनाधिकृत चेष्टा नहीं की। विधानसभा या लोकसभा के पटल पर अपनी विधायी शक्तियों का पूर्ण उपयोग किया। भारतीय संविधान के आदर्श संयोजन की कल्पना को यथार्थ में बदलने का अपनी ओर से पूरा प्रयास किया।

जीवनोपयोगी जानकारी-6

- अभयसिंह रोडला

गतांक से आगे

16. पर्यावरण विज्ञान अभियांत्रिकी (Environmental Science Eng.) : अभियांत्रिकी की इस शाखा के अन्तर्गत अभियांत्रिकी सिद्धान्तों का प्रयोग पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में किया जाता है। पुनर्चक्रण (Recycling), अपशिष्ट प्रबंधन, जल एवं वायु प्रदूषण की रोकथाम आदि अनुप्रयोग इसी शाखा के अन्तर्गत हैं।

17. सूचना विज्ञान अभियांत्रिकी (Information Science Eng.) : सूचना तकनीकी एवं तंत्र की विशेषज्ञता इस शाखा में प्राप्त की जाती है। छोटी से बड़ी सभी कम्पनियां, संस्थान आदि की सूचना तकनीक पर निर्भरता बढ़ते जाने से इस क्षेत्र के विशेषज्ञों की मांग भी बढ़ती जा रही है।

18. औद्योगिक अभियांत्रिकी (Industrial Eng.) : इसके अन्तर्गत उद्योगों के डिजाइन तथा संचालन संबंधी प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

19. औद्योगिक उत्पादन अभियांत्रिकी (Industrial Production Eng.) : इसके अन्तर्गत उद्योगों में होने वाले निर्माण व उत्पादन से संबंधित तकनीक एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

20. इन्स्ट्रूमेन्टेशन इंजीनियरिंग : यह इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग से निकली एक पृथक शाखा है जिसके अन्तर्गत विभिन्न मशीनों, उपकरणों के रख-रखाव, प्रबंधन, विकास एवं स्थापना (Installing) का अध्ययन किया जाता है।

21 मरीन इंजीनियरिंग (Marine Eng.) : इसके अन्तर्गत पानी के जहाज, बोट, पनडुब्बी जैसे सभी प्रकार के सामुद्रिक यानों के डिजाइन, निर्माण, संचालन, निरीक्षण एवं रख-रखाव आदि का अध्ययन किया जाता है।

22. मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग : इसके अन्तर्गत चिकित्सा के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले यंत्रों तथा उपकरणों के विद्युतीय (Electronic) पक्ष का अध्ययन किया जाता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

मेवाड़ के उमराव

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

मेवाड़ रियासत के शासक गोहिल अथवा गुहिल या गहलोत क्षत्रिय कहलाते हैं। शिशोदा गांव के निवासी होने के कारण सिसोदिया कहलाते हैं। गुहिल वंश का संस्थापक बापा रावल को माना जाता है। इस वंश की प्रसिद्ध राजधानी चित्तौड़गढ़ रही है। बाद में वागड़ क्षेत्र में स्वतंत्र रियासतें बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर अस्तित्व में आईं। प्रतापगढ़ एवं शाहपुरा भी स्वतंत्र रिसायतें कालान्तर में बनीं। महाराणा उदयसिंह ने चित्तौड़ से अलग उदयपुर की स्थापना की। बाद में उदयपुर ही मेवाड़ धरा की राजधानी कहलाने लगी।

मेवाड़ धरा की प्राकृतिक छटा, यहां की राष्ट्र भक्ति, वीरता आदि से प्रभावित होकर भारत वर्ष के अनेक प्रदेशों से क्षत्रियों ने मेवाड़ में आकर बसना उचित समझा। विभिन्न युद्धों में वीरता दिखाने के उपलक्ष में उन्हें यहां के शासकों ने जागीरें प्रदान की। महाराणा उदयसिंह के पौत्र एवं महाराणा प्रताप के पुत्र महाराणा अमरसिंह द्वितीय के समय 16 उमराव एवं 32 राव की व्यवस्था की गई। जो महाराणा के राजतिलक से लेकर विभिन्न समयों पर परामर्श का हिस्सा होते थे। 16 उमरावों के ठिकाने आज उदयपुर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा एवं पाली जिलों में उपस्थित है। 16 उमरावों में चूण्डावत, शक्तावत एवं सारंगदेवोत ही गुहिल वंश से हैं अन्य उमराव राजपूतों की अन्य खांपों से हैं जिनके पूर्वजों ने मेवाड़ की रक्षा में अपना सामर्थ्य झोंका था। ये सोलह उमराव मेवाड़ के प्रथम श्रेणी के मनसबदार कहलाते हैं।

'त्रण झाला त्रण पूरबिया (चौहान),
चूण्डावत भड़ चार।
दो शक्ता, दो राठौड़, सारंगदेव न पंवार।।'

सोलह उमरावों के ठिकानों की खांपों का वर्णन इस प्रकार है :

1. बड़ी सादड़ी (झाला) : काठियावाड़ गुजरात में हलवद के राजसिंह के पुत्र अज्जा मकवाना के वंशज सादड़ी बड़ी के जागीरदार हैं। अज्जा को यह जागीर महाराणा रायमल ने प्रदान की थी।

2. देलवाड़ा (झाला) : काठियावाड़ के हलवद के कुमार अज्जा के भाई सज्जा मकवाना को महाराणा रायमल ने देलवाड़ा की जागीर प्रदान की।

3. गोगुन्दा (झाला) : यह जागीर महाराणा अमरसिंह प्रथम ने झाला शत्रुशाल के छोटे पुत्र कान्हा को प्रदान की थी।

4. बेदला (चौहान) : मेवाड़ में पूर्वोत्तर दिशा के प्रदेशों से आकर रहने के कारण चौहान पूरबिया कहलाते हैं। बेदला के जागीरदार सम्राट पृथ्वीराज चौहान के वंशज चन्द्रभान के वंशधर हैं।

5. पारसोली (चौहान) : बेदला के राव रामचन्द्र चौहान के छोटे पुत्र केशरीसिंह के वंशज है जिन्हें यह जागीर महाराणा राजसिंह के समय प्रदान की गई।

6. कोठरिया (चौहान) : रणथम्भौर के चौहान राजा हम्मीर के वंशधर माणिकचन्द के वंशज हैं।

7. सलूम्बर (चूण्डावत) : महाराणा लाखा के बड़े पुत्र रावत चुण्डा के वंशधर हैं।

8. आमेट (चूण्डावत) : रावत चूण्डा के प्रपोत्र रावत जग्गा के वंशज आमेट के उमराव हैं।

9. देवगढ़ (चूण्डावत) : यहां के उमराव रावत चूण्डा के प्रपोत्र राव सांगा चूण्डावत के वंशज हैं।

10. बेगू (चूण्डावत) : बेगू के रावत सलूम्बर रावत सांईदास चूण्डावत के भाई खेंगारजी के पुत्र गोविन्ददास के वंशधर है।

11. भीण्डर (शक्तावत) : महाराणा उदयसिंह के दूसरे पुत्र शक्तिसिंह के ज्येष्ठ पुत्र भाण को यह जागीर महाराणा प्रताप से मिली।

12 बान्सी (शक्तावत) : शक्तिसिंह के पुत्र रावत अचलदास के वंशज बान्सी के उमराव है।

13. बदनोर (राठौड़) : मेड़ता मारवाड़ के प्रसिद्ध योद्धा राव जयमल मेड़तिया के वंशज बदनौर के जागीरदार बने जो उन्हें महाराणा उदयसिंह ने प्रदान की।

14. घाणेराव (राठौड़) : मेड़ता राव वीरमदेव राठौड़ के पुत्र व जयमल राठौड़ के भाई प्रतापसिंह मेड़तिया के वंशज।

15. कानोड़ (सारंगदेवोत) : चित्तौड़ के महाराणा लाखा के पुत्र अज्जा के बेटे सारंगदेव के वंशधर।

16. बिजोलिया (पंवार) : मालवा प्रदेश के परमार वंशीय राजकुमार अशोक पंवार के वंशज बिजोलिया के उमराव हैं।

उपरोक्त सोलह उमरावों के अलावा महाराणा अमरसिंह के देहान्त के उपरान्त पांच ठिकाने और जोड़े गए। जिन्हें प्रथम श्रेणी की बैठक में बैठने का अधिकार तब मिलता था जब 16 उमरावों में से कोई अनुपस्थित हो। इन नए ठिकानों के लिए कहा गया :

दो राजा त्रण राजवी, चूण्डा फेरो चार।
जमादार सुल्तान है, डोडिया गढ सरदार।।

चार ठिकाने चुण्डावतों के थे जो भैंसरोडगढ, कुराबड़ (सलूम्बर के वंशज), आसीन्द ठिकाने के वंशज एवं चौथे मैजा आमेट ठिकाने के वंशजों के वंशधर थे। पांचवा सरदारगढ़ डोडिया क्षत्रियों की जागीर था जो गुजरात के शार्दुलगढ़ के सिंह डोडिया के पुत्र धवल डोडिया के वंशधर हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'राष्ट्र यज्ञ की ज्वाला को क्षीण न होने दें'

पृष्ठ एक से लगातार....

शिविर के दौरान संघ ने हमारी सामूहिक भावना, राष्ट्रीय भावना, सामाजिक भावना, मानवीय भावना को झकझोरा एवं परिवर्तन को महसूस किया है। लेकिन हमारा स्वभाव एवं गुण हमारे साथ आए हैं, परमेश्वर प्रदत्त हैं, उनके लिए किसी प्रकार की हीन भावना लाए बिना प्रारब्ध को बदलने का यहां पुरुषार्थ किया, जो काबिले तारीफ है। संघ ने जिन भावनाओं के साथ आपका स्वागत किया, आपने उन्हें समझा और बदलाव लाने का प्रयत्न किया, यही क्षात्र भाव है। यही क्षात्र भाव संसार में परिवर्तन ला सकता है। हमें किसी का उन्नयन नहीं करना बल्कि अपनी आत्मा पर आए आवरणों को हटाने का प्रयास करना है और वह आपने इन 11 दिनों में किया। संघ ने हमें गीता में वर्णित सृष्टि के आदि ज्ञान को दिया एवं अब हमारा दायित्व इसे जन-जन तक पहुंचाना है। हमारा जीवन एक परिवार, एक समाज, एक जाति या एक देश तक सीमित नहीं है। क्षात्र धर्म देश, काल एवं परिस्थिति निरपेक्ष धर्म है। आपका संघ ने स्वागत किया और आपने संघ का लेकिन अब विदाई के समय डर लगता है कि कहीं बाहर का वातावरण आप पर प्रभावी न हो जाए इसीलिए यह विदाई भी मैं भविष्य के स्वागत के लिए दे रहा हूं। हमने एक दीर्घ सूत्री काम हाथ में लिया है, जो अनेक जीवन मांगता है इसीलिए परमेश्वर से प्रार्थना

करें कि वे हमें मुक्ति नहीं बल्कि उनके इस काम को करने के लिए शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, संघर्ष प्रियता, त्याग वृत्ति, ईश्वरीय भाव प्रदान करे। हमारे में यह दायित्व भाव जागृत करें कि यह संसार मेरा है। इसकी सद्गति एवं दुर्गति का दायित्व मेरा है। ऐसा होने पर ही हम क्षत्रिय बन पाएंगे। संघ का मार्ग क्षत्रिय बनाने का मार्ग है इसीलिए सदैव परमेश्वर से इस मार्ग पर बनाए रखने की क्षमता देने की प्रार्थना करें। पतन की ओर जाते संसार को रोकना एक दिन का या एक व्यक्ति का काम नहीं है इसलिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। संसार को पतन से बचाने के लिए आंखों में आंसू नहीं अंगारे लाने हैं। अपने आपको लगातार देखते रहें और जब भी स्वयं को कमजोर समझें दौड़कर संघ के पास आएं, संघ आपकी सहायता को तत्पर रहेगा। कर्म को कभी नहीं छोड़ना है बल्कि कर्म के अहंकार को छोड़ना है, फल की कामना को छोड़ना है। सदैव यही ध्यान रखना कि लोग मुझे देख रहे हैं, मेरा आचरण उनके पतन का कारण नहीं बन जाए। ऐसी ही मंगल कामना के साथ संघ आपको इस शिविर से विदाई देता है।

11 मई को प्रातः ब्रह्मवेला से लेकर 21 मई की ब्रह्मवेला तक चले शिविर में राजस्थान एवं गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, बिहार से भी समाज बंधु प्रशिक्षण लेने पहुंचे। इनके अतिरिक्त मुंबई, सूरत, पूना, चैन्नई, दिल्ली, दुबई आदि स्थानों पर व्यवसायरत प्रवासी राजस्थानी स्वयंसेवकों ने भी प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण का दायित्व संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यकांबास के नेतृत्व में युवा पीढ़ी ने संभाला। शिविर की संख्या 570 के लगभग रही जिनके प्रशिक्षण में सुविधा के लिए 55 घट एवं 22 पथक बनाए गए। प्रत्येक घट में एक वरिष्ठ स्वयंसेवक को घटनायक एवं प्रत्येक पथक में एक-एक पथक शिक्षक बनाए गए। चर्चा, बौद्धिक आदि सामूहिक कार्यक्रम दो अलग-अलग समूहों में किए गए। शिविरार्थियों के लिए भोजन आदि की व्यवस्था बाड़मेर के स्वयंसेवकों ने आपसी सहयोग से की।

इस प्रकार संघ द्वारा अपने ही लोगों के सहयोग से विकसित किए जा रहे आदर्श शिविर स्थल आलोक आश्रम में पहला उच्च प्रशिक्षण शिविर अब तक के शिविरों में सर्वाधिक संख्या वाले शिविर के रूप में संपन्न हुआ। शिविर में आगामी शिक्षा सत्र के अनुरूप दिसम्बर तक की कार्य योजना को लेकर सामान्य चर्चा की गई एवं संभाग प्रमुखों व प्रांत प्रमुखों को क्षेत्र में जाकर अपने साथी स्वयंसेवकों से विचार-विमर्श कर विस्तृत योजना बनाकर भेजने हेतु कहा गया।

'मेरी साधना' व 'सहगायनों' पर चर्चा

शिविर के दौरान समास्या के कालांश में पूर्व संघ प्रमुख श्रद्धेय आयुवानसिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' पर चर्चा की गई जिसमें आम युवक के मन में समाज एवं राष्ट्र के प्रति कुछ करने की चाह के संकल्प में परिवर्तित होने की यात्रा का विवरण है। छोटे-छोटे अवतरणों के रूप में इस यात्रा के दौरान आने वाले अवरोधों एवं सहयोगी तत्वों का वर्णन इस पुस्तक में सूत्र रूप में किया गया है। इसी प्रकार अर्थबोध के कालांश में पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित साधना परक सहगीतों पर चर्चा की गई। इस चर्चा में भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखार कर उसे समाज एवं तदुपरान्त परमेश्वर के सापेक्ष बनाने वाली त्याग मूलक वृत्ति को आपसी चर्चा कर समझाने का प्रयास किया गया। आशा एवं निराशा के झूले के बीच अपने पुरुषार्थी संकल्प को जीवित रखकर उसे निरन्तर पोषित करते हुए मजबूत बनाने के सूत्र पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित 'झनकार' में निहीत हैं। उन्हीं सूत्रों को समझ कर अपनाने का प्रयास इन गीतों पर चर्चा कर किया गया।

सूचना के अधिकार सहित अन्य साधनों को जाना

वर्तमान व्यवस्था में आमजन को न्याय दिलवाने हेतु संविधान प्रदत्त साधनों की जानकारी के क्रम में 16 मई को शिविर में सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता यशवर्धनसिंह झेरली का कार्यक्रम रखा गया जिसमें उन्होंने सूचना का अधिकार, राजस्थान सम्पर्क पोर्टल, नागरिक अधिकार पत्र, जिला स्तरीय सतर्कता समितियां, प्रधानमंत्री कार्यालय एवं मुख्यमंत्री कार्यालय की शिकायत निवारण व्यवस्था, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, लोकायुक्त, उपभोक्ता न्यायालय, जनहित याचिका एवं स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ये सभी साधन गरीब एवं उपेक्षित की सहायता के हमारे क्षात्रभाव को धरातल पर लाने में सहयोगी हो सकते हैं। लेकिन साथ ही उन्होंने कहा कि सावधानी का विषय है कि ये सभी साधन हैं, हम इनका उपयोग जन हितार्थ करें तब ही हमारा क्षात्रभाव पुष्ट होगा। यदि हमने इनका उपयोग व्यक्तिगत खुन्नस निकालने के लिए किया तो बदनाम होने की पूरी संभावना है।

बौद्धिक के माध्यम से समझाया संघ दर्शन

अपराह्न खेल पश्चात् प्रवचन के कार्यक्रम में विभिन्न विषयों के माध्यम से संघ के दर्शन को समझाया गया। प्रतिदिन एक विषय पर प्रवचन दिया जाता जिसे बौद्धिक के नाम से जाना जाता है। इस शिविर में उद्देश्य, मार्ग, लोक संग्रह, अधिकारी साधक, जीवित समाज के लक्षण, ध्वज, अनुशासन, उत्तरदायित्व, हमारी सांस्कृतिक विशेषताएं, हमारा ऐतिहासिक अंतरावलोकन एवं नेतृत्व विषय पर बौद्धिक के माध्यम से संघ का दर्शन स्पष्ट किया गया।

शिविर में शादी

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार 11 मई को शिविर स्थल पर ही संघ के स्वयंसेवक भगतसिंह जसई के पुत्र नरेन्द्रसिंह एवं बलवंतसिंह महणसर की पुत्री तेजस्वी कंवर का विवाह संपन्न हुआ। संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में सभी शिविरार्थी इस विवाह में शामिल हुए एवं वर-वधु को मंगलमय दाम्पत्य जीवन की शुभकामनाएं दी। विवाह पूर्ण सादगी से विभिन्न प्रकार की रूढ़ियों को नकारते हुए संपन्न हुआ।

संपादकीय

चुनावी मुद्दे और विकास

चुनावों के समय विकास की बातें बहुत होती हैं। आज से 70 वर्ष पहले भी होती थी, आज भी होती हैं और भविष्य में भी होती रहेंगी। वास्तव में विकास ऐसा मुद्दा है जो कभी पूरा नहीं होता, लगातार चलता ही रहता है। आज का विकास कल पुराना पड़ जाता है और फिर से नए विकास की बातें होने लगती हैं। इसलिए चुनावों के समय जितनी जोर-शोर से इसकी बात की जाती है, वोट के दिन नजदीक आते-आते यह नेपथ्य में चला जाता है क्यों कि इस तथाकथित विकास में वोट दिलाने की ताकत नहीं होती। जिस तथाकथित विकास की बात की जाती है वह चंद बुद्धि प्रधान लोगों के जीवन को प्रभावित करता है, शेष आम लोग तो स्वभावतः मंथर गति से वैश्विक कारणों से उनकी सुख सुविधाओं में जो वृद्धि होती है उससे ही जुड़े होते हैं और उसकी गति इतनी मंथर होती है कि उनके जीवन में उससे कोई आमूल चूल परिवर्तन नहीं होता इसलिए उनके लिए यह समर्थन या विरोध का कोई बड़ा मुद्दा नहीं बनता। इसलिए राजनीतिक दल केवल बौद्धिक चोंचलेबाजी में विकास जैसे शब्द का इस्तेमाल करते हैं और भारत वर्ष में यह विगत 70 वर्षों से करते आए हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। क्यों कि वे भी यह जानते हैं कि यह विकास नामक बौद्धिक चोंचलेबाजी वोटों की फसल काटने के लिए पर्याप्त नहीं है इसलिए वे प्रारम्भ भले ही विकास से करें, लोक दिखावे में भले ही विकास की बात करें, लेकिन वास्तविक मुद्दे तो भावनात्मक ही होते हैं। राजनीतिक लोग भली-भांति जानते हैं कि किसी व्यक्ति के समर्थन या विरोध के पीछे भावनाएं ही उत्प्रेरक का काम करती हैं। भावनाएं ही व्यक्ति को समर्थन या विरोध करने को मजबूर करती हैं। पूरा खेल ही भावनाओं का है और राजनीतिक लोग चुनावों के समय अपनी तरकश से वे तीर चलाते हैं जो लोगों की भावनाओं पर सीधा वार करे। व्यक्ति की आस्था उसकी भावना से सीधा संबंध रखती है और भारत एक आस्थावान देश है ऐसे में उसकी भावनाओं को आसानी से उपयोग में लिया जा सकता है। कभी ये भावनाएं हिन्दू और मुस्लिम के नाम पर भड़काई जाती हैं तो कभी अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक के नाम पर भड़काई जाती हैं। कभी ये भावनाएं गाय और गोबर के नाम पर भड़काई जाती हैं तो कभी मंदिर और मस्जिद के नाम पर। कभी ये भावनाएं मस्जिदों और गिरिजाघरों से जारी फतवों पर सवार होकर आती है तो कभी ये जिन्ना, पटेल, अम्बेडकर या नेहरू के नाम पर पनपती हैं। कभी-कभी ये भावनाएं जाति के रथ पर सवार होती हैं तो कभी भाषा के रथ पर। कुल मिलाकर चुनावी मुद्दे तो वे ही हो सकते हैं जो आमजन की भावनाओं को स्पर्श कर सकें ऐसे में तथाकथित विकास को मुद्दा बनाने की बात बेमानी है। विकास के साथ तथाकथित विशेषण लगाने पर आपको आपत्ति हो सकती है लेकिन यह भी वास्तविकता है कि यह विकास वास्तव में विकास नहीं बल्कि विकास का भ्रम मात्र ही है। जीने खाने की कुछ सुविधाओं को विकास कहना भ्रम नहीं तो और क्या है? कभी आप धीरे चलने वाली रेल में बैठते थे अब तेज चलने वाली रेल में बैठने लगे। कभी आप उबड़-खाबड़ सड़क पर चलते थे अब आप अच्छी सड़क पर चलने लगे। कभी आप 200 मीटर दूर से पानी भरते थे अब आपके घर पानी आने लगा। ये सब वास्तव में विकास नहीं है। कुछ भौतिक सुविधाओं का नाम ही विकास माना जाए तब तो रामायण कालीन श्रीलंका को सर्वाधिक विकसित माना जाना चाहिए क्योंकि वहां लोगों के घर भी सोने के बने थे। वास्तव में जीने खाने की सुविधाएं जुटाना विकास नहीं बल्कि उन सुविधाओं का उपयोग करने वाले मन एवं बुद्धि का उन्नयन ही विकास है। वही विकास हमारे जीवन के समस्त पहलुओं को छूता है। उस विकास के बदौलत ही जनता अभावों में भी सुखपूर्वक जी कर उत्तरोत्तर अपने जीवन लक्ष्य की ओर प्रवाहित हो सकती है लेकिन पश्चिम में हुए वैज्ञानिक आविष्कारों की चकाचौंध में हमारी विकास की अवधारणा दुर्भाग्यपूर्ण रूप से क्षरण को प्राप्त हुई है और आज देश की मेधा शक्ति आश्चर्यजनक रूप से चंद भौतिक सुविधाओं को विकास के नाम से परिभाषित कर राजनेताओं की षड्यंत्रकारी बुद्धि का शिकार होती जा रही है और उधर ये राजनेता आम जनता की भावनाओं पर मारक चोट कर उनकी वैशाखियों के सहारे सत्ता के शीर्ष पर चढ़ते जाते हैं। इसलिए विचारणीय विषय यह है कि क्या तथाकथित विकास कभी चुनावी मुद्दा बन सकता है? उत्तर ना में ही आएगा क्योंकि देश में हो रहे लगातार चुनाव इस बात को पुष्ट करते हैं कि यह विकास केवल बाह्य आकर्षण है जो सुविधाभोगी बुद्धि को पंगु बनाकर आमजन की भावनाओं से खेलने का मार्ग निष्कंटक बनाता है। यदि हमें वास्तव में विकास की ओर अग्रसर होना है तो सुविधाओं को नहीं बल्कि सुविधाओं को भोगने वाले मन एवं बुद्धि के स्तर को उन्नत करना पड़ेगा ताकि वास्तविक रूप से विकास ही देश की व्यवस्था के केन्द्र में आ सके एवं यह राष्ट्र पुनः विश्व को अपने पीछे चलने की प्रेरणा देकर सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण का अग्रदूत बन सके।

एक सह सम्पद : सायंकालीन प्रार्थना का विहंगम दृश्य

खरी-खरी

'नेकी कर, मीडिया में डाल'

हमारे देश में एक कहावत प्रचलित है, 'नेकी कर, कुए में डाल।' इसका अर्थ यह बताया जाता है कि नेकी अर्थात भलाई करके कुए में डाल देना चाहिए अर्थात् उसे भूल जाना चाहिए। नेकी शब्द नेक से बना है। नेक का अर्थ अच्छा, भला या सज्जन होता है। इस प्रकार नेकी का अर्थ है अच्छा काम, भला काम, उत्तम व्यवहार आदि। हमारी परम्परा क्यों कि मूल रूप से श्रीमद् भगवद्गीता में वर्णित आदि ज्ञान से ओतप्रोत है इसलिए परिणाम या प्रभाव की अपेक्षा कर्तव्य कर्म को करने मात्र पर ही जोर दिया जाता है। अपेक्षा रहित कर्म करना निष्काम कर्म करना लगभग एक जैसा ही है इसलिए हमारे यहां कहावत प्रचलित हुई 'नेकी कर, कुए में डाल' अर्थात् हमारा दायित्व, हमारा पुरुषार्थ केवल भले काम या उत्तम काम को करने तक ही सीमित है, उसे करने के बाद भूल जाना चाहिए, विस्मृत कर देना चाहिए क्योंकि परिणाम हमारे कार्य क्षेत्र में नहीं आता। इसीलिए सामान्य बोलचाल की भाषा में गीता ज्ञान को प्रस्तुत किया गया, 'नेकी कर कुए में डाल।' लेकिन आजकल ठीक इसके विपरीत हो रहा है। किसी भी काम को करने के बाद तुरन्त उसका परिणाम प्राप्त करने की चाह इतनी बलवती हो गई है कि सामान्य जीवन व्यवहार को भी इस चाह की पूर्ति में प्रचारित किया जाता है। नेकी करने वालों के उत्तम कार्य को प्रसारित करना व्यक्ति से बड़ी सत्ता समाज आदि का विषय है ताकि उससे अन्य लोग प्रेरणा ले सकें लेकिन अब तो इतना इंतजार करने का धैर्य नितांत चूक गया है इसलिए अपने उस कार्य को तुरन्त प्रचारित कर लोगों की सद्भावनाएं एवं प्रशंसा पाने की चाह अति बलवान बन गई है। सोशल मीडिया की सुलभ उपलब्धता ने इस काम को अति सरल कर दिया है इसलिए अब इस कहावत का रूप भी बदल गया है और बन गया है 'नेकी कर मीडिया में डाल।' आजकल तो यदि कोई अपने माता-पिता के चरण स्पर्श करता है तो उसकी भी फोटो खिंचवा कर फेसबुक पर डालता है और फिर उसके मित्र उसे श्रवण कुमार का नेक्स्ड वर्जन घोषित करने को उतावले हो जाते है। (शेष पृष्ठ 5 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	07.06.2018 से 10.06.2018 तक	आंतरी माताजी, **आंतरी** जिला नीमच (म.प्र.)। सम्पर्क सूत्र : 7357179555
2.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	07.06.2018 से 10.06.2018 तक	महाराणा प्रताप हॉस्टल, **गढी परतापुर,** बांसवाड़ा। बांसवाड़ा से डूंगरपुर जाने वाली बसें गढी परतापुर होकर जाती हैं। **सम्पर्क सूत्र :** 9783624223, 9983565520, 9587968610
3.	प्रा.प्र.शि.	07.06.2018 से 10.06.2018	**ईडवा** (डेगाना) जिला नागौर
4.	प्रा.प्र.शि.	11.06.2018 से 14.06.2018 तक	**बस्सी** (चित्तौड़गढ़), सम्पर्क सूत्र : 7357179555
5.	प्रा.प्र.शि.	13.06.2018 से 16.06.2018 तक	हनुमानजी मंदिर **देसु** (जालोर) से 13 किमी दूर। सम्पर्क सूत्र : ईश्वरसिंह, चक्रवर्ती सिंह
6.	प्रा.प्र.शि.	15.06.2018 से 18.06.2018 तक	**हल्दीघाटी** (राजसमंद)। सम्पर्क सूत्र : 9829081971
7.	प्रा.प्र.शि.	15.06.2018 से 18.06.2018 तक	पाबूजी मंदिर **धांगडवास,** सोजत सिटी जोधपुर रोड पर स्थित। सोजत सिटी से बसें उपलब्ध। सम्पर्क सूत्र : राजेन्द्रसिंह 96366-43030

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

टीके की राशि लौटाई

जैसलमेर के मूलाना गांव के पूर्व सरपंच की पौत्री के विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष की ओर से पेश की गई 7 लाख 11 हजार के टीके की राशि को कोलू निवासी दूल्हे राजूसिंह पुत्र राणीदान सिंह ने विनम्रता पूर्वक लौटाकर अनुकरणीय उदाहरण पेश किया।

इसी प्रकार कराना निवासी भवानीसिंह पुत्र मदनसिंह हाल निवासी जयपुर ने वीरवाड़ा (केकड़ी) में अपने विवाह के अवसर पर टीके के रूप में मात्र 500 रुपए एवं दहेज के रूप में मात्र एक पलंग व बिस्तर स्वीकार कर अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

श्री योगेश्वर छात्रावास
कुचामन सिटी, नागौर
● कक्षा 3 से 12वीं के विद्यार्थियों हेतु आवासीय स्थान
● अनुशासन एवं नियमित दिनचर्या
● शिक्षा के साथ संस्कार निर्माण पर बल
● वरिष्ठ जनों का मार्गदर्शन
● शुद्ध पौष्टिक एवं सात्विक आहार
● सभी प्रमुख शिक्षण संस्थानों के समीप स्थित
● सद् साहित्य, समाचार पत्रों व सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था
● सभी सुविधाओं युक्त भवन
● कमजोर छात्रों हेतु विशेष शिक्षण व्यवस्था
नत्थुसिंह छापड़ा मो. 9772097087, 7073305111
शिवराजसिंह आसरवा मो. 9929668333, 7976332203

(पृष्ठ चार का शेष)

नेकी कर...

देश-प्रदेश के बड़े लोगों को गर्मियों में पक्षियों के लिए परिंडे लगाने की फोटो सोशल मीडिया में शेयर करते देख विचार आता है कि हमारे गांवों में हर घर में घड़े फूटने के बाद उनके आधे भाग में पानी भरकर अलग-अलग जगह रखने की परम्परा जैसे इन्हीं की देन है। यदि कोई मार्ग चलते किसी घायल पशु को देखता है तो उसकी सहायता करने से पूर्व उसके साथ फोटो खींचकर सोशल मीडिया में शेयर कर महाराजा शिवि का नेक्स्ड वर्जन घोषित होने के बाद ही अगला कदम उठाता है। किसी असहाय वृद्ध को सड़क पार कराते लोगों की फोटो जब फेसबुक पर देखते हैं तो लगता है कि जैसे सड़क पार कराना उद्देश्य नहीं है बल्कि वह तो साधन है जिससे फेसबुक पर परोपकारी होने का प्रमाण पत्र मिलता है। यदि परिवार में किसी को हल्की सी बीमारी हो जाए तो उसकी अस्पताल के बिस्तर से फोटो जरूर फेसबुक पर आती है और फिर दुआओं का दौर आशातीत रूप से चलता है। इस प्रकार जीवन व्यवहार के सामान्य कर्तव्यों, संवेदनाओं एवं दायित्वों का प्रचार कर हम कौनसे निष्काम भाव को प्राप्त होना चाहते हैं पता नहीं और इससे भी अगला प्रश्न कि क्या हम ऐसा चाहते भी हैं, तो उत्तर मिलेगा निश्चित रूप से नहीं चाहते और यदि नहीं चाहते तो क्या हम प्रगति के पथ पर हैं?

काणेटी में शिविर संपन्न

गुजरात के अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत के काणेटी में 26 से 29 मई तक युवाओं का प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसमें काणेटी, सांणद, पिंपण, मोडासर, अहमदाबाद, पडुस्मा, महेसाणा आदि स्थानों के शिविरार्थी शामिल हुए। शिविर का संचालन दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने कुलदीपसिंह काणेटी, हरपालसिंह पिंपण, बटुकसिंह काणेटी, जसवंतसिंह काणेटी, इन्द्रजीत सिंह जेतलवासना के सहयोग से किया। आयोजन एवं व्यवस्था का जिम्मा ग्रामवासियों के सहयोग से दीवानसिंह काणेटी ने संभाला। शिविर में सांघिक निर्देशानुसार प्रशिक्षण दिया गया।

चुरू प्रांत की प्रांतीय बैठक

27 मई को रतनगढ़ में चुरू प्रांत की प्रांतीय बैठक वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेरसिंह गुड़ा के सानिध्य में रखी गई जिसमें आगामी छह माह की कार्य योजना बनाई गई। दिसम्बर से पहले लगने वाले शिविरों एवं शाखाओं के प्रस्ताव तैयार किए गए। संभावित शाखाओं की सूची बनाई गई। संघशक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता को लेकर चर्चा की गई। स्नेहमिलन में प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह आलसर सहित मोहनसिंह, भगवानसिंह मीतासर, किशनसिंह गौरीसर आदि स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

द्रोण डिफेंस एकेडमी
केरलपुरा रोड़, कुचामन बाईपास, कुचामन सिटी
एयरफोर्स, नेवी, आर्मी, सीआरपीएफ, एससी, बीएसफ, सीआईएसएफ, आरपीएफ, राज. पुलिस की तैयारी हेतु पूर्णतः आवासीय कोचिंग सेंटर
सेना विशेषज्ञों द्वारा फिजिकल ट्रेनिंग
सुरजीतसिंह शेखावत (निदेशक) मो. 9950468248
हुकमसिंह राठौड़ (संरक्षक) मो. 9828376806
कोचिंग के साथ बीए, बीएसी, बीकॉम नियमिति विद्यार्थी के रुप में करवाई जाती है।

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान
रजि. केन्द्र
मुख्य केन्द्र
अब आपकी सेवा में
आंखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
● केटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी ● कॉन्टेक्ट लेंस क्लिनिक
● रेटिना ● कॉर्निया
● ग्लूकोमा ● अल्प दृष्टि उपकरण ● बाल नेत्र चिकित्सा
● भैंगापन ● आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र
सुपर स्पेशिलाइज एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ
डॉ. एल.एस. झाला
डॉ. विनीत आर्य
डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. राकेश आर्य
डॉ. नितिश खतुरिया
डॉ. गर्व विश्नाई
● शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
● निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए फ्री आई केयर)

'राष्ट्र यज्ञ की ज्वाला को क्षीण न होने दें'

(पेज तीन से लगातार)

प्रभात संदेश में मिले जीवन के सूत्र : शिविर में प्रतिदिन प्रातःकालीन प्रार्थना के समय माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा प्रभात संदेश दिया जाता जिसमें दिन भर के चिंतनीय सूत्र प्रदान किए जाते। 12 मई को माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि परमेश्वर ने हमें श्रेष्ठ योनि में जन्म दिया एवं महापुरुषों ने श्रेष्ठता को अर्जित करने के लिए मर्यादाएं बनाई। शिविर में भी हमारे लिए मर्यादाएं निश्चित की गई हैं उनका पालन कर हम श्रेष्ठता की ओर बढ़ सकते हैं। 13 मई को बताया कि संघ आचरण प्रधान है इसीलिए यहां आचरण का अभ्यास करवाया जाता है। यहां शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों सीखते हैं। केवल शब्दों का संग्रह ही ज्ञान नहीं कहलाता, केवल सुनने से काम नहीं चलता बल्कि चलना पड़ता है इसलिए यहां पूरे दिन सभी कार्यक्रमों में चलने का अभ्यास करवाया जाता है। गुरु केवल दिशा दर्शन करा सकता है। चलना तो स्वयं को ही पड़ता है। सीखना और आचरण में लाना दोनों पृथक बात है और आचरण में नहीं आने पर सीखने का कोई महत्त्व नहीं रहता। श्रद्धावान ही जानकर तदनुरुप आचरण कर सकता है। श्रद्धा के बिना संभावना शून्य है। 14 मई को माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम संसार से आते हैं तो सत, रज, तम में से तम की मात्रा अधिक लेकर आते है। संघ चिकित्सक की भांति हमारे तम का विनाश करता है लेकिन इसके लिए चिकित्सक की भांति औषधि, पथ्य एवं परहेज तीनों बताता है। इन तीनों का

सम्मिलित प्रयोग ही उपचार कर सकता है अन्यथा योग्य चिकित्सक भी हमारी सहायता नहीं कर सकता। इसलिए हम इन तीनों के सहारे संघ का सहयोग कर स्वयं को स्वस्थ बनाएं। 15 मई को उन्होंने कहा कि संस्कारों के सृजन में पूर्व जन्मों के कर्मों एवं हमारे माता-पिता के व्यवहार के असर को हम सामान्यतया बदल नहीं सकते क्योंकि वे हमारे जन्म से पहले का घटनाक्रम है लेकिन संघ में आकर उचित वातावरण में हम पुरुषार्थ द्वारा हमारे वर्तमान जीवन में सुधार ला सकते हैं इसके लिए आज्ञा पालन एवं सेवा ही श्रेष्ठ माध्यम है। आज्ञा पालन भी एक प्रकार की सेवा ही है। सेवा ही वह माध्यम है जो अतिरिक्त पुरुषार्थ होने पर पूर्वजन्मों के संस्कारों को काट सकती है। संघ में घट नायक, पथक शिक्षक एवं शिक्षक की आज्ञा का पालन हमें यही अभ्यास करवाता है। हमारे में पर्याप्त संभावना है, अतिरिक्त पुरुषार्थ द्वारा हम हमारे प्रारब्ध को भी बदल सकते है।

16 मई के प्रभात संदेश में बताया कि हमारे आदि पुरुषों ने साधना, तपस्या द्वारा जो ईश्वरीय तत्व ग्रहण किया वही शास्त्र है और शास्त्र हमें बताते हैं कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। यही विधि है और विधि पूर्वक किया गया कार्य ही मंजिल को प्राप्त करवाता है। शिविर में भी हमें बताया जाता है कि क्या करना है और क्या नहीं करना, यही हमारे लिए विधि है, इसकी पालना ही हमें शिविर का हेतु हासिल करवाएगी। कोई भी दोषों को रखना नहीं चाहता लेकिन तमस के प्रभाव के कारण ऐसा होता है।

17 मई को माननीय संघ प्रमुख श्री ने कागभुसुण्डी और गरुड़ जी का आख्यान बताते हुए कहा कि सत्संग के माध्यम से ही हम हमारी शंकाओं का निवारण कर सकते हैं। शंकाओं के निवारण के लिए निष्कपट भाव से व निर्मल मन से श्रद्धापूर्वक प्रश्न पूछना पड़ता है, शंका को प्रकट करना पड़ता है और संघ हमें ऐसा अवसर उपलब्ध करवाता है। 18 मई को गीता के संदेश 'योगः कर्मशु कौशलम' को केन्द्र बनाकर बताया कि स्थूल शरीर एवं सूक्ष्म शरीर को एक शिष्ट में लाकर सम्यक बनाकर कर्म करने से ही योग संभव है। संघ की साधना सम्पूर्ण योग का अभ्यास करवाती है। 19 मई को बताया कि सम्पूर्ण सृष्टि विभिन्नताओं से अच्छादित है। कोई भी एक वस्तु अन्य जैसी नहीं है, यहां तक कि हर पेड़ के पत्तों की हरीतिमा भी भिन्न-भिन्न है। इन विभिन्नताओं में एकता का दर्शन करना ही साधना है। गीता इस एकता को स्थापित करने का सशक्त माध्यम है लेकिन दुर्भाग्य है कि हमारे देश में गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ का दर्जा नहीं मिल पाया। 20 मई को माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि हैं लेकिन दुर्भाग्य से आज यम नियम की कोई बात नहीं करता और सीधे ध्यान व समाधि की बातें की जाती हैं जो वास्तव में ढोंग और पाखण्ड हैं। संघ यम नियम से प्रारम्भ होकर क्रमिक रूप से आगे बढ़ने का मार्ग है। इसीलिए इसे सम्पूर्ण योग मार्ग कहा गया है। इस मार्ग पर निर्देशानुसार चलने पर स्वाभाविक रूप से योग घटित होगा।

खेलों में हुआ प्रायोगिक अभ्यास

खेल संघ की प्रयोगशाला है। प्रवचन एवं चर्चा के माध्यम से जिन गुणों का अधिष्ठान कराया जाता है खेलों में उनका परीक्षण करवाया जाता है एवं इस प्रकार प्रत्येक स्वयंसेवक की प्रगति का ध्यान रखा जाता है। शिविर की दिनचर्या में प्रतिदिन तीन बार खेलों का अवसर मिलता है। प्रातःकालीन खेल जहां संघर्ष पूर्ण मैदानी खेल होते हैं वहीं अपराह्न विश्राम पश्चात् बौद्धिक क्षमताओं के संवर्धन हेतु छोटे-छोटे खेल खिलाए जाते हैं। शाम को भी हल्के संघर्ष, दौड़-भाग वाले खेल होते हैं। इस शिविर में 22 पथक बनाकर अलग-अलग पथक शिक्षकों के निर्देशन में खेल खिलाए गए। बालू रेत के मैदान ने खेलों में रूचि जागृत करने में विशेष सहयोग दिया।

समझे महत्वाकांक्षा को नासूर बनाने से रोकने के उपाय :

शिविर के घटनायकों, पथक शिक्षकों एवं अन्य दायित्वाधीन स्वयंसेवकों ने वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी के निर्देशन में पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखित पुस्तक 'साधक की समस्याएं' के प्रथम अध्याय 'महत्वाकांक्षा का नासूर' को समझने का प्रयास किया। किस प्रकार प्रेरक शक्ति महत्वाकांक्षा कालांतर में समस्या बनकर नासूर का रूप ले लेती है एवं अपने साथियों व समाज से ही प्रतिस्पर्धा पाल लेती है इसका विशद विवरण इस अध्याय में किया गया है। साथ ही इसे नासूर बनने से रोकने के उपायों का भी वर्णन इस अध्याय में शामिल है।

मिथ्या धारणाओं को छोड़ने का आह्वान

शिविर में 20 मई को राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं विगत छह माह से संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के साथ काम कर रहे महेन्द्रप्रतापसिंह गिराब ने कैरीयर संबंधी जानकारी देते हुए बताया कि हमने आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, ग्रामीण पृष्ठभूमि, आरक्षण आदि को लेकर मिथ्या धारणाएं पाल ली हैं जो हमें आगे बढ़ने से रोकती हैं। उन्होंने विभिन्न उदाहरण देकर बताया कि इन सब परिस्थितियों के बावजूद हमारे अनेक लोग अपनी मेहनत एवं लगन के बल पर सफल हुए हैं, हमें उन सफल लोगों से प्रेरणा लेनी चाहिए। कार्यक्रम के दौरान नौकरियों के अवसरों एवं विशेषकर प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी को लेकर अपनाई जाने वाली युक्तियों के बारे में बताया गया।

गीता गायन का अभ्यास

भगवान श्री कृष्ण द्वारा उद्घाटित गायन श्रीमद्भगवद् गीता संस्कृत काव्य है जिसका शुद्ध एवं लय पूर्ण गायन प्रगति में साधक है। अनेक स्थानों पर स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी कृत कालजयी टीका यथार्थ गीता का अखंड पाठ कराने की परम्परा प्रारम्भ हुई है। जयपुर के श्री अरविन्द स्वामी भी इस काम में संलग्न हैं। 15 मई को वे शिविर स्थल पर आए एवं चुने हुए शिविरार्थियों को गीता के शुद्ध एवं लयपूर्वक गायन का अभ्यास करवाया।

कार्यसिद्धि और उम्र

कार्यसिद्धि में उम्र कभी बाधक नहीं होती है। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण आज भी अमिट रूप से विद्यमान हैं। अभिमन्यु ने भी अपने बलिदान से कार्यसिद्धि में उम्र के महत्व को निराधार सिद्ध किया था। उसके जज्बे की स्मृति मे उस दिन गगन भी अनायास रुदन कर बैठा था। पाषाण आज भी बरबस वीर रस का गान कर बैठते हैं। युद्ध कौशलता तो उम्र की परिभाषा त्याग शत्रु को भी प्रशंसा के लिये बाध्य कर देती है। युद्ध में अपनी सार्थकता जान अभिमन्यु मां से अनुमति हेतु प्रस्तुत हुआ। भला मां कैसे अनुमति देती कि, जा पुत्र तू अबोध होते हुए भी क्षात्र धर्म की परंपरा में अपना नाम चिरस्थायी कर दे, जिसकी आयु अभी मित्रो के संग खेलने की थी वह शस्त्रों से रास रचाने की अनुमति चाह रहा था। मां की गोद में सूनेपन की स्थापना हेतु सत्यनिष्ठ कह रहा हो कि मै अपने ही परिजनों से कपट पूर्वक मृत्यु की प्राप्ति हेतु गमन चाहता हूँ। अभिमन्यु ने कहा मेरी उम्र उज्जवल परंपरा में बाधक नहीं बनेगी। उसने अपने पिता के धवल वस्त्रों पर कायरता के बिन्दुओं को अंकित न करने का आश्वासन प्रदान किया। मां सोच रही थी कि यह क्षात्र धर्म भी कितना क्रूर है। परंतु मां अपने उतरदायित्व से भली भाँति परिचित थी। मां ने अपनी लहू धार की रक्षा के लिये आँसूओं का पान कर क्षात्र धर्म के पालन की अनुमति दी। तत्पश्चात ममत्व के दूसरे सोपान मे प्रवेश हेतु अभिमन्यु शीघ्रता करने लगा। अभिमन्यू अर्धांगिनी के समक्ष मौन व्रत धारण कर खड़ा हो गया। मानो वह उतरा का दोषी हो। स्मृति मे झाँककर देखा कि उसने उतरा को सात जन्मों तक का साथी रहने का वचन दिया था। परंतु काल के समक्ष वह नतमस्तक हो परंपरा पालन का वचन दे चुका था। दाम्पत्य के कुछ वर्षों की साधना चित्रपट की भांति चल पड़ी। मौन भंग करते हूए उतरा से कहा, 'मैं तेरा दोषी हूं। जन्म जन्मांतर का साथ देने के वचन का पालन मैं एक जन्म भी न कर सका।' उतरा आश्चर्यचकित हो गयी। कहने लगी 'नाथ!' यह क्या कह रहे हैं अपनी कुल परंपरा में इतना संकोच? क्या मैने इस अभिमन्यू से परिणय किया था? जन्म जन्मांतर का साथ देने के वचन के अतिरिक्त यह भी तो वचन दिया था कि मैं अपने लहू से कुल की कीर्ति का अभिषेक करूंगा। उतरा भी तो क्षत्राणी है, क्या वह नहीं जानती कि वह बिके सर वाले से परिणय कर रही है। मेरा पति युद्ध क्षेत्र में जा रहा है और मै आरती न करके विधवा बनने का शोक करूं। नहीं नाथ नहीं यह तो क्षात्र धर्म का उल्लंघन होगा। आर्यपुत्र। मुझे आप पर पूरा विश्वास है कि आप विधाता के अटल विधान की भांति, अटल गति की भांति, सूर्यदेव के अटल पुंज प्रकाश की भांति, शशि के अटल लावण्य की भांति अपना नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित करेंगे कि श्री कृष्ण का नीति निपुण भांजा, अर्जुन और सुभद्रा का पुत्र और उतरा की मांग का सम्मान अभिमन्यु वीर है। अभिमन्यु ने युद्ध क्षेत्र में प्रस्थान किया। देवता यह सम्पूर्ण दृश्य स्वर्ग से देख रहे थे। अपने कुल की मर्यादा की प्रबल मंदाकिनी सरिता को देख इन्द्र ने भी मूंछो को ताव दिया। सम्पूर्ण भारत वर्ष के योद्धाओं में जीने और मरने की होड़ मची थी। विकराल परिस्थिति का भान कर विधाता भी संकट में पड़ गया क्योंकि जीवन की लालसा को तिलांजलि मिल चुकी थी। जैसे ही अभिमन्यु युद्ध क्षेत्र मे पहुंचा, कौरव सेना तितर बितर हो गयी। आज अभिमन्यु भगवान विष्णु की भाँति युद्ध कर रहा था। द्रोण का रचाया चक्रव्यूह मकड़ी के जाले की भाँति टूट गया। सभी आश्चर्यचकित हो गये। पूरी कौरव सेना में कोई न था जो क्षण भर से अधिक टिक सके। सातों महारथी जो जग जय भी आसानी से कर लेते, अबोध बालक पर टूट पड़े। सात ओर से अस्त्र-शस्त्रों की अविरल बौछार प्रारंभ हो गयी। अस्त्र-शस्त्र टूट जाने पर बालक ने पहिये युद्ध को गति प्रदान की क्योंकि शस्त्र त्याग तो परंपरा का उल्लंघन था। क्षण में वीर की वीरगति सूचना वायु के साथ फैल गयी। पक्षी चहचहाना क्षणिक विस्मृत कर बैठे, सरितायें प्रबल प्रवाह को भूल बैठी, पाषाण अनायास रो पड़े ।

कमल सिंह सुलताना

कृतज्ञता ज्ञापित कर यथार्थ गीता भेंट की

संघ के स्वयंसेवक नरेन्द्रसिंह जसाई का विवाह स्वयंसेविका तेजस्वी कंवर महणसर से होने के उपरान्त नरेन्द्रसिंह ने पहली बार महणसर आने महणसर की गंगा विद्या पीठ विद्यालय के सभी अध्यापकों एवं कर्मचारियों को कृतज्ञता पूर्वक यथार्थ गीता की एक-एक प्रति भेंट की। उल्लेखनीय है कि नव विवाहिता तेजस्वी कंवर ने इसी विद्यालय में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा हासिल की थी। इस अवसर पर नव विवाहिता के पिता बलवंतसिंह महणसर सहित परिवार जन उपस्थित थे।

विशेष शिविर संपन्न : उच्च प्रशिक्षण शिविर में नहीं आ पाए सहयोगी वर्ग का 4 दिवसीय विशेष शिविर 23 से 25 मई तक आलोक आश्रम बी.जी.ए. बाड़मेर में रखा गया जिसमें 55 स्वयंसेवक उपस्थित हुए। माननीय संघ प्रमुख ने उपस्थित शिविरार्थियों को संघ के सम्पूर्ण योग मार्ग को बताते हुए यम नियम पर विशेष जोर देने को कहा क्यों कि इनके पालन से ही आगे की यात्रा का आधार बनता है। साधना पथ एवं गीता के संदेश पर विशेष रूप से चर्चा की गई एवं पूज्य तनसिंह जी के संदेश को आत्मसात कर घर-घर तक पहुंचाने के लिए स्वयं को तैयार करने पर बल दिया गया। आश्रम में आगामी मानसून के समय 1000 नए विकसित पौधे लगाने के लिए अर्थ की व्यवस्था का दायित्व भी लिया गया।

(पृष्ठ दो का शेष)

23. मैकेनिकल इंजीनियरिंग : इसके अंतर्गत जटिल मशीनों एवं यंत्रों का निर्माण एवं संचालन सम्मिलित है, जैसे : इलेक्ट्रिकल जनरेटर, एलीवेटर, एस्केलेटर, अर्न्तदहन इंजन आदि।

24. माइनिंग (Mining) इंजीनियरिंग : अभियांत्रिकी की यह शाखा खनिजों के निष्कासन में प्रयुक्त होने वाली तकनीक के अध्ययन से संबंधित है।

25. मैनुफेक्चरिंग साइन्स इंजीनियरिंग : यह इण्डस्ट्रियल तथा मैकेनिकल इंजीनियरिंग से मिलती-जुलती शाखा है, जिसमें निर्माण पक्ष को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

26. पॉलीमर (Polymer) इंजीनियरिंग : यह मुख्यतः प्लास्टिक से संबंधित तकनीकों के अध्ययन की शाखा है।

27. टेक्सटाईल इंजीनियरिंग : अभियांत्रिकी की इस शाखा में वस्त्र उद्योग से संबंधित तकनीकों, नियमों, सिद्धान्तों आदि का अध्ययन किया जाता है। सिल्क टेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग तथा कारपेट टेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग आदि इसी की उपशाखाएं हैं।

अगले अंकों में हम गणित विषय वर्ग के विद्यार्थियों हेतु क्षेत्र विशेष में उपलब्ध कैरियर विकल्पों पर विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे।

पढ़ते रहें पथ प्रेरक।

मेवाड़...

मेवाड़ से बाहर जाकर सिसोदियों ने कई रियासतें स्थापित की। नेपाल के राजाओं की एक शाखा सिसोदिया गुहील है। मराठा सरदार शिवाजी गुहील वंशज थे। महाराष्ट्र की कोल्हापुर रियासत के राजा भौसले सिसोदिया है। गुजरात में भावनगर, पालीताणा, लाठी, वल्भिपुर व राजपीपला गुहील वंशीय है। हिमाचल प्रदेश के कई पहाड़ी राजा जो अपने को राणा कहते हैं गुहील सिसोदियों के वंशज है।

(पृष्ठ एक का शेष)

धार्मिक कट्टरता...

आगामी चुनावों को लेकर सरकार को चेतावनी या अल्टीमेटम आदि को लेकर पूछे गए प्रश्न के जवाब में संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम इस प्रकार के झगड़े वाले लोग नहीं हैं, हमारे लोगों से इस प्रकार के विवादों से दूर रहने को कहते हैं। राजनेताओं को लेकर पूछे गए प्रश्न के जवाब में उन्होंने कहा कि अधिकांश नेता बात राष्ट्र की करते हैं लेकिन वास्तव में पार्टी भक्त, व्यक्ति भक्त या अपने पेट के भक्त हैं, बहुत कम लोग राष्ट्र भक्त बचे हैं। ऐसे में स्वार्थ की राजनीति करने वाले नेताओं को हम क्षत्रिय नहीं मानते। धर्म के विषय में पूछे गए प्रश्न पर उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक रूप से व्यक्ति को भगवान से जोड़ने वाला ही धर्म है। यह एक दार्शनिक विषय है, अनेक परिभाषाएं प्रचलित हैं। सांसारिक दृष्टि से ऐसे नियम जिन पर चलना चाहिए, जो धारण करने योग्य हैं, जो हमारी रक्षा करते हैं वे धर्म हैं। संसार के लोग जिसे धर्म मान रहे हैं उसमें मेरी सहमति नहीं है। कोई बछड़े को धर्म मानता है, कोई गाय को धर्म मानता है, कोई पीपल को धर्म मानता है, मैं ऐसा नहीं मानता।

किस रूप...

क्या महाराणा प्रताप को अपनी जनता को सुख सुविधाएं उपलब्ध करवाने वाले शासक के रूप में याद करें तो प्रताप को जीवन का अधिकांश समय संघर्ष में बीता, उन्होंने अपनी जनता के जीवन को सुखद बनाने के लिए निश्चित रूप से प्रयास किए लेकिन उनसे कहीं अधिक सुखी जनता उन राज्यों की होगी जो संघर्ष में प्रवृत नहीं थे लेकिन उनको तो प्रताप की तरह याद नहीं किया जाता। क्या प्रताप को मंदिरों का निर्माण कराने वाले शासक के रूप में याद किया जाए तो मंदिर तो उनसे कहीं अधिक मानसिंहजी ने बनाए थे लेकिन उन्हें तो इस रूप में याद नहीं किया जाता। क्या प्रताप को किसी पूजा पद्धति के संरक्षक के रूप में याद किया जाए तो इनसे भी अधिक पूजा पद्धति को ही धर्म मानने वाले शासक थे लेकिन उन्हें भी प्रताप की तरह याद नहीं किया जाता। ऐसे में स्पष्ट होता है कि प्रताप उपर्युक्त बातों के निर्वाहक होते हुए भी प्रतीक नहीं थे। आजकल हिन्दुत्व के नाम पर जिस प्रकार उन्हें मुस्लिम विरोध का प्रतीक बनाया जा रहा है वैसे भी प्रताप नहीं थे। प्रताप स्वतंत्रता के उपासक थे। वे स्वाभिमान के उपासक थे। उनका संघर्ष साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ था। उनका संघर्ष विस्तारवादी प्रवृत्ति के विरुद्ध संघर्ष था। वे भारत की उस सह अस्तित्व वाली सोच के प्रतीक थे जिसमें हर छोटा राज्य अपनी स्वायतत्ता के साथ अपनी जनता के आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास में संलग्न रहता था और हड़पने वाली विस्तारवादी संस्कृति से बचा हुआ था। वास्तव में प्रताप का संघर्ष भारतीयता और भारत के बाहर से आई विस्तारवादी संस्कृति के बीच संघर्ष था। यह हिन्दू-मुस्लिम का संघर्ष नहीं बल्कि विस्तारवादी या साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ स्वयं से स्वतंत्र अस्तित्व को बरकरार रखने का संघर्ष था। यदि अकबर की जगह कोई अंग्रेज होता तो भी प्रताप यह संघर्ष करते। यहां तक कि यदि कोई राजपूत शासक भी इस प्रकार की विस्तारवादी नीति के तहत मेवाड़ को हड़पने का प्रयास करता तो प्रताप उससे भी उसी रूप में संघर्ष में प्रवृत्त होते। इसलिए आएं हम सब स्वतंत्रता, स्वाभिमान एवं स्वायतत्ता के उस प्रतीक को किसी पंथ, जाति या क्षेत्र विशेष का प्रतीक बनने से रोकें। वे स्वतंत्रता, स्वाभिमान एवं अपनी स्वायतत्ता के लिए साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ वैश्विक प्रतिमान हैं उन्हें छोटे दायरों में बांधने के प्रयासों से परहेज करना चाहिए।

सोने की..

संघ ने हमें आज ऐसा अवसर उपलब्ध करवाया है, हमें इसका पूरा लाभ लेना है। पश्चिम के वैचारिक आक्रमण से लुप्त होती जा रही हमारी उज्ज्वल संस्कृति एवं परम्पराओं का रक्षण करने का दायित्व वहन करने हेतु हमें अपने आपको तैयार करना है। 28 मई से प्रारम्भ हुए इस शिविर में राजस्थान एवं गुजरात के विभिन्न जिलों से 250 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर की व्यवस्था का दायित्व जैसलमेर के समाज बंधुओं ने वहन किया। शिविर में माननीय संघ प्रमुख श्री का भी सानिध्य मिला।

रूढियों को त्यागने का संकल्प लिया

जालोर के भीनमाल में 25 मई को राजपूत समाज की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में समाज के बंधुओं ने भाग लिया। बैठक को भोमिया राजपूत सभा के जिलाध्यक्ष विरदसिंह पांथेडी, भैरूसिंह भागल भीम, भोमिया राजपूत युवा परिषद के जिलाध्यक्ष सर्जनसिंह राठौड़, पूर्व सरपंच अजीतसिंह चौहान, सोमतसिंह अरणु, भभूतसिंह वाडा भाड़वी आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने उचित मार्ग दर्शन द्वारा प्रतिभाओं को तराशने, आपसी द्वेषता दूर करने, कुरीतियों को त्यागने एवं संगठित रहने की आवश्यकता पर अपनी बात कही। बैठक में समाज हित में अनेक फैसले लिए गए। सामाजिक बुराइयों को मिटाने का संकल्प लिया गया। मृत्यु होने पर अफीम, डोडा एवं पोस्त को पूर्ण प्रतिबंधित करने का निर्णय लिया गया एवं साथ ही मिष्ठान बनाने पर भी पूर्ण रोक लगाने का निर्णय लिया गया।

समता आंदोलन द्वारा 'मिशन-59' की घोषणा

समता आंदोलन द्वारा अपनी स्थापना की 10वीं वर्षगांठ पर 18 मई को 'मिशन-59' की घोषणा की गई जिसमें प्रदेश विधानसभा की 59 आरक्षित सीटों पर ऐसे उम्मीदवारों का समर्थन करने का फैसला किया गया जो एससी, एसटी आरक्षण में क्रीमीलेयर सिद्धान्त लागू करवाएगा, पदोन्नति में आरक्षण बंद करवाएगा, एससी, एसटी अत्याचार अधिनियम में बिना जांच गिरफ्तारी पर रोक लगवाएगा। ऐसे 6 मुद्दों पर सहमति जताने वाले प्रत्याशियों को ही समर्थन देने की घोषणा की गई एवं ऐसा शपथ-पत्र देने वाले 9 प्रत्याशियों को मीडिया के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

प्रेमसिंह रुणीजा ने किया भारत का प्रतिनिधित्व

दिल्ली मेट्रो के वरिष्ठ उप महाप्रबंधक/परिचालन प्रेमसिंह रुणीजा ने 28 मई से 2 जून तक पेरिस में हुई सेमिनार में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने भारतीय मेट्रो परिचालन पर 25 युरोपियन, यु.एस.ए. व एशियन मेट्रो प्रतिनिधियों के समक्ष अपनी बात रखी।

राजपूत समाज के विवाह योग्य लड़क-लड़कियों के अभिभावक सगाई संबंध हेतु सम्पर्क करें।

मोहनसिंह शेखावत (सुल्ताना)
123 चांद बिहारी नगर, खातीपुरा रोड,
जयपुर-302 012
मोबाइल : 9660639561, 9610755067

राव बल्लूजी की जयंती मनाई

अपने पिता को दिए वचन के पालनार्थ दो बार वीरगति को पाने वाले वीर बल्लूजी चांपावत की 427वीं जयंती लूणी (जोधपुर) तहसील के नारनाड़ी गांव में 26 मई को समारोहपूर्वक मनाई गई। समारोह को केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकारसिंह लखावत, राजस्थान बीज निगम के अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर, घनश्यामसिंह गंठिया, आर.ए.एस. राजेन्द्रसिंह जालेली, श्रीकुबाजी पीठाधीश्वर वासुदेवाचार्य, सूरजभानसिंह सिणली, भवानीसिंह धांधिया, हनुमानसिंह आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने वीरवर बल्लूजी चांपावत की वीरता, वचन पालन, स्वामी भक्ति, उत्तरदायित्व वहन करने की चाह आदि गुणों से प्रेरणा लेकर अनुसरण करने का आह्वान किया। केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री ने उन इतिहास पुरुष की जयंती में शामिल होना स्वयं से लिए गर्व की बात बताई।

पूर्व उपराष्ट्रपति को श्रद्धांजलि

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भारत के पूर्व उप राष्ट्रपति भैंरोसिंह शेखावत की आठवीं पुण्यतिथि पर 15 मई को जयपुर के विद्याधर नगर स्थित उनके स्मृति स्थल पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राज्यपाल कल्याण सिंह, मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित अनेक राजनेता, अधिकारी एवं सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि इस अवसर पर उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने स्मृति स्थल पर बिल्व पत्र का पौधा लगाया एवं परिण्डो में पानी डाला। उपस्थित लोगों ने शेखावत को राजस्थान के विकास के लिए समर्पित व्यक्तित्व बताया एवं उनके जीवन से सीख लेने की आवश्यकता बताई। शाम को स्मृति स्थल व भाजपा मुख्यालय पर प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया।

शादी में शराब व मांस का निषेध

वर्तमान में जहां विवाह समारोहों में महंगी शराब एवं विभिन्न प्रकार के मांस का प्रयोग शान का विषय बनता जा रहा है वहीं आहोर (जालोर) तहसील में मंडला गांव निवासी पाबूसिंह पुत्र भीमसिंह ने अपनी पुत्री अनिता उर्फ मधुक्षरा कंवर बालोत के विवाह में शराब एवं मांस के प्रयोग को निषेध कर इस क्षेत्र में अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। वर पक्ष ने इसमें सहयोग किया।

परमवीर पीरूसिंह का 100वां जन्मदिवस मनाया

झुंझुनूं में शहीद पीरूसिंह स्मारक पर 20 मई को उनके सौवें जन्म दिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि के उपरान्त शहीद पीरू सिंह राजकीय माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में सभा आयोजित की गई जिसे पुलिस अधीक्षक मनीष अग्रवाल, आर.ए.एस. राजेन्द्रसिंह सौंथली आदि ने संबोधित करते हुए परमवीर की एकाकी वीरता, अदम्य साहस और कर्तव्य निष्ठा को अनुकरणीय बताया। इस अवसर पर चित्तौड़गढ़ के गोपालसिंह राठौड़ द्वारा पीरूसिंह पर लिखी पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

जवाहिर राजपूत छात्रावास में आशीर्वाद समारोह

जैसलमेर के जवाहिर राजपूत छात्रावास में विगत एक माह से आई कृपा सैनिक अकेडमी के सहयोग से सेना की लिखित परीक्षा की तैयारी कर रहे 40 राजपूत युवकों को राजपूत सेवा समिति द्वारा 25 मई को समारोहपूर्वक आशीर्वाद दिया गया। समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष दुष्यन्तसिंह लखमना ने कहा कि आपके आगे बढ़ने से समाज आगे बढ़ेगा। मुख्य अतिथि विक्रमसिंह नाचना ने कहा कि सेना में जाकर भारत माता की सेवा करना बड़ा काम है। इस अवसर पर दिलीपसिंह राजावत, सवाईसिंह देवड़ा, वार्डन विशनसिंह लौद्रवा, प्रयागसिंह आदि ने भी अपने विचार रखे। वक्ताओं ने हर भर्ती से पहले ऐसी तैयारी करवाने का सुझाव दिया।

मदारिया में कुंभा स्मारक का शिलान्यास

राजस्थान धरोहर संरक्षण प्राधिकरण की ओर से मदारिया (राजसमंद) में 25 मई को महाराणा कुंभा के प्रस्तावित स्मारक का शिलान्यास किया गया। 3 करोड़ की लागत से बनने वाले इस स्मारक में महाराणा कुंभा की 9 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित की जाएगी। इसके अलावा उनके जीवन से संबंधित घटनाओं का टू डी व थ्री डी सहित इलेक्ट्रोनिक माध्यम से जीवंत और आकर्षक प्रदर्शन किया जाएगा। इस अवसर पर धरोहर संरक्षण प्राधिकरण के औंकारसिंह लखावत, सांसद हरिओम सिंह राठौड़, विधायक हरिसिंह रावत, जिला प्रमुख प्रवेश सालवी सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सांसद व विधायक मद से भी इस बाबत राशि की घोषणा की गई। बताया गया कि यह स्मारक 15 अगस्त तक बनकर तैयार हो जाएगा।

पूज्य नारायणसिंह रेड़ा की धर्मपत्नी का देहावसान

संघ के तृतीय संघ प्रमुख पूज्य नारायणसिंह रेड़ा की धर्मपत्नी श्रीमती मोहनकंवर का 26 मई को 78 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। 3 अक्टूबर 1940 को बीकानेर जिले की कोलायत तहसील के गांव खजोड़ा के अलसीसिंह भाटी के यहां जन्मी मोहनकंवर का विवाह 13 मई 1946 को पूज्य नारायणसिंह के साथ हुआ। आपके 2 पुत्र (हमेन्द्रसिंह एवं जगतसिंह) एवं तीन पुत्रियां (भंवरी कंवर, प्रेम कंवर एवं कैलाश कंवर) हुईं। पूरा परिवार संघ से जुड़ा हुआ है। माननीय संघ प्रमुख श्री ने साथी स्वयंसेवकों सहित बाड़मेर से चक 2 डी.ए.एम (विजयनगर) पहुंचे एवं दाह संस्कार में शामिल हो श्रद्धाजंलि अर्पित की।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org